नानाजी ने राजनीति से सन्यास लेकर गांव के विकास की शपथ ली। जो भारतीय राजनीति में एक अनूठा उदाहरण था।
साठ साल से ऊपर अनुभवी राजनीतिज्ञों को सत्ता से अलग होकर समाज के लिए रचनात्मक कार्यों में लग जाना चाहिए।
उन्होंने अपनी कर्मभूमि गोण्डा में विकास की प्रयोगशाला शुरू की। उपलब्ध स्थानीय संसाधनों से सर्वांगीण ग्राम विकास का कार्य शुरू किया।
यहां खेती के विकास के लिए बांस से बने 20,000 हैंडपम्प लगाए जाएंगे।